BPSC MODEL TEST PAPER

YOUR DREAM, OUR MISSION
YOUTH DESTINATION
IAS • PCS

Name			
Medium		**Regd. No.**	
Centre's Name		**Date**	

BPSC (General Studies) Paper –

Maximum Marks — 300	Time : 3 hours / घंटे
Phone Number :	

Instructions

- The figure in the margin indicate full marks.
- Answer eight questions, selecting three each from Section-I and Section-II, and any two from Section-III.
- Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.
- All questions have been printed both in English and Hindi. In case of any ambiguity in Hindi version, the English version shall be considered authentic.
- Parts of the same question must be answered together and must not be interposed between answers to other questions.

अनुदेश :

- उपान्त के अंक पूर्णांक के द्योतक हैं।
- खण्ड–I एवं खण्ड–II प्रत्येक में से तीन-तीन प्रश्नों और खण्ड–III में से किन्हीं दो प्रश्नों का चयन करते हुए आठ प्रश्नों के उत्तर दें।
- परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।
- सभी प्रश्न अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषा में छपे हैं। यदि हिन्दी भाषा में कोई संदेह है, तो अंग्रेजी भाषा को ही प्रामाणिक माना जाएगा।
- एक ही प्रश्न के विभिन्न भागों के उत्तर अनिवार्य रूप से एक साथ ही लिखे जाएँ तथा उनके बीच में अन्य प्रश्नों के उत्तर न लिखें जाएँ।

यहाँ कुछ न लिखें

यहाँ कुछ न लिखें

Section — 1 खण्ड — 1

(38 × 3) = 114

प्रश्न 1. बक्सर युद्ध के कारणों एवं परिणामों का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

Ques 1. **Critically examine the causes and consequences of the Buxar War.**

प्रश्न 2. पानीपत का तीसरा युद्ध 1761 में लड़ा गया था। क्या कारण है कि इतनी अधिक साम्राज्य-प्रकंपी लड़ाईया पानीपत में लड़ी गई थी।

Ques 2. **The third war of Panipat was fought in 1761. What is the reason that so many imperial battles were fought in Panipat.**

प्रश्न 3. राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में डॉ. अम्बेडकर के महत्व का मूल्यांकन कीजिए?

Ques 3. **Evaluate the importance of Dr. Ambedkar in the history of the national movement.**

प्रश्न 4. गांधार मूर्तिकला रोमनिवासियों की उतनी ही ऋणी थी जितनी कि वह यूनानियों की थी, स्पष्ट कीजिए?

Ques 4. **The Gandhara sculpture was as indebted to the Romans as it was to the Greeks, explain?**

प्रश्न 5. 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान बिहार में जनभागीदारी का वर्णन कीजिए?

Ques 5. **Describe the public participation in Bihar during the Quit India Movement of 1942?**

यहाँ कुछ न लिखें

प्रश्न 6 (A). मौर्यकला पर प्रकाश डालिए तथा बिहार में इसके प्रभाव का विश्लेषण कीजिए।
Ques 6 (A). Throw light on Mauryan Art and analyze its impact in Bihar.

प्रश्न 6 (B). स्वामी सहजानंद के विशेष संदर्भ में बिहार में हुए कृषक आन्दोलनों पर आलोचनात्मक टिप्पणी कीजिए?
Ques 6 (A). Make a critical comment on the agrarian movements in Bihar with special reference to Swami Sahajanand?

प्रश्न 6 (C). उन परिस्थितियों का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए जिनके कारण भारत का बांग्लादेश के उदय में निर्णायक भूमिका का निर्वसन करना पड़ा।
Ques 6 (C). Critically examine the circumstances that led to the elimination of India's decisive role in the rise of Bangladesh.

Section — 2 खण्ड — II

(38 × 3) = 114

प्रश्न 7. 'धर्म पर पुरोहितों का आधिपत्य एवं धार्मिक कर्मकाण्डों की प्रधानता ही वैदिकोत्तर काल की पहचान बन गई थी' इसकी समालोचना करें?
Ques 7. Criticize the dominance of priests over religion and the primacy of religious rituals became the hallmark of post-Vedic period?

प्रश्न 8. हिन्दुत्व अवधारणा का परीक्षण कीजिए। क्या यह धर्मनिरपेक्षवाद का विरोधी है?
Ques 8. Test the concept of Hindutva . Is it against secularism?

यहाँ कुछ न लिखें

प्रश्न 9. सहिष्णुता एवं प्रेम की भावना न केवल अति प्राचीन समय से ही भारतीय समाज का एक रोचक अभिलक्षण रही है, अपितु वर्तमान में भी यह महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। सविस्तार स्पष्ट कीजिए।

Ques 9. The spirit of tolerance and love has not only been an interesting feature of Indian Society since time immemorial, but it is also playing an important role in the present. Explain in detail.

प्रश्न 10. बिहार में पाल कला की प्रधान विशेषताओं का विवरण प्रस्तुत कीजिए?

Ques 10. Describe the main features of Pal art in Bihar?

प्रश्न 11. क्या आप के विचार में खिलाफत आंदोलन को महात्मा गांधी के समर्थन ने उनकी धर्म निरपेक्ष साख पर बट्टा लगा दिया था। घटनाओं के आंकलन को आधार बनाते हुए अपना तर्क प्रस्तुत कीजिए?

Ques 11. Did you think that Mahatma Gandhi's support for the Khilafat movement had betrayed his secular credentials? Based on the assessment of events, present your argument.

Section — 3 खण्ड — III

(36 × 2) = 72

प्रश्न 12. आचार्य विनोबा भावे के भूदान व ग्रामदान आंदोलनों के उद्देश्यों की समालोचनात्मक विवेचना कीजिए और उनकी सफलता को आंकलन कीजिए?

Ques 12. Critically analyze the objectives of Acharya Vinoba Bhave's Bhoodan and Gramdan movements and assess their success?

प्रश्न 13. सरकार द्वारा संचालित 'स्वदेश दर्शन योजना' तथा 'प्रसाद योजना' किस प्रकार पर्यटन विकास एवं भारतीय सांस्कृति विरासत को संरक्षित करने में योगदान दे सकती है? चर्चा कीजिए?

Ques 13. How can the 'Swadesh Darshan Yojana' and 'Prasad Yojana' run by the government contribute to tourism development and preserving Indian cultural heritage? Discuss.

यहाँ कुछ न लिखें

प्रश्न 14. उन परिस्थितियों का वर्णन कीजिए जिनके सहयोग से अंग्रेज भारत में अपना राजनैतिक आधिपत्य स्थापित करने में सफल हो जाए।

Ques 14. Describe the circumstances with which the British would be successful in establishing their political hegemony in India.

प्रश्न 15. आयु, लिंग तथा धर्म के बंधनों से मुक्त होकर, भारतीय महिलाएं भारत के स्वाधीनता संग्राम में अग्रणी बनी रही विवेचना कीजिए।

Ques 15. Freed from the shackles of age, gender and religion, Indian women continue to be a leader in India's freedom struggle.

YOUR DREAM, OUR MISSION YOUTH DESTINATION

BPSC MODEL TEST SOLUTON

टेस्ट पेपर - 1

प्रश्न 1. बक्सर युद्ध के कारणों एवं परिणामों का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

उत्तर-

बक्सर के युद्ध की शुरुआत ईस्ट इंडिया कंपनी के हेक्टर मुनरो तथा मुगल नवाबों की सेना के बीच 1764 के आरंभ में हो गई थी, जिसमें मीर कासिम की पराजय हुई। यह युद्ध भी प्लासी के युद्ध जैसा निर्णायक रहा। नवाब का वर्चस्व समाप्त हो गया तथा वह अंग्रेजों का कठपुतली मात्र रह गया। बक्सर के युद्ध के पश्चात् ही अंग्रेज उत्तर भारत पर भी अपना दावा करने लगे।

बक्सर के युद्ध के कारण:

इस युद्ध के निम्नलिखित कारण हैं:

1. बंगाल के नवाब मीर कासिम एवं अंग्रेजों के बीच संप्रभुता एवं वर्चस्व की स्थापना।
2. अंग्रेजों द्वारा 1717 के फरमान एवं दत्तक उत्तराधिकारी का दुरुपयोग कर नवाब के द्वारा आन्तरिक व्यापार से सभी करों को हटा देना।
3. अंग्रेजों द्वारा नवाब के अधिकारियों के साथ दुर्व्यवहार एवं कंपनी के सेवकों द्वारा बंगाल पर अत्याचार किया जाना।
4. पानीपत के तृतीय युद्ध के बाद अवध का नवाब शुजाउद्दौला स्वयं को शक्तिशाली अनुभव कर रहा था। इस युद्ध में वह अहमद शाह अब्दाली का मित्र और सहयोगी रह चुका था। उत्तर भारत में मराठा शक्ति के पत्तनोपरान्त वह मराठा शक्ति से भी मुक्त था। शुजा ने अपनी सैन्य शक्ति के द्वारा दिल्ली में शाह आलम को मुगल पैतृक राजसिंहासन पर पुनस्थापित करने का विफल प्रयास किया।
5. अंग्रेजों के साथ-साथ मीर कासिम का भी शुजाउद्दौला के प्रति भी अनुकूल दृष्टिकोण नहीं था, कारण इन दोनों को यह शक था कि शुजाउद्दौला बंगाल सूबे को अवध में शामिल करना चाहता था। परन्तु बिहार से अपने निष्कासन के बाद मीर कासिम को शुजाउद्दौला से सहायता की याचना करनी पड़ी।
6. जनवरी, 1764 में मीर कासिम शुजाउद्दौला से मिला और अन्ततः वह मीर कासिम की सहायता करने के लिए तैयार हो गया। इस सम्बन्ध में इन दोनों के मध्य हुए समझौते के द्वारा यह तय हुआ कि मीर कासिम सैनिक खर्चों के लिए शुजाउद्दौला को 11 लाख रुपये प्रतिमाह प्रदान करेगा, बंगाल की गद्दी पर पुर्नस्थापित हो जाने के बाद बिहार के प्रान्त को अवध के साथ विलय कर देगा और प्रस्तुत अभियान के सफल समापन के उपरांत 3 करोड़ रुपये नकद प्रदान करेगा।
7. मई, 1764 के पटना के आस-पास कुछ सैनिक अभियानों के पश्चात् शुजाउद्दौला ने बक्सर के जिले में अपना अड्डा जमाया। यहीं पर अंग्रेजों ने 23 अक्टूबर, 1764 को शुजाउद्दौला को पराजित किया। शुजा की सेना में विद्यमान पूर्वोक्त मूलभूत दोषों के अतिरिक्त उसके द्वारा युद्ध क्षेत्र में सैन्य अभियान की अकुशल योजना, उसके विनाश के प्रमुख कारण थे।

बक्सर के युद्ध के परिणाम:

1. अंग्रेज बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा के वास्तविक शासक बन गए।
2. बंगाल का नवाब अंग्रेजों पर आश्रित था तथा मुगल बादशाह उसका पेंशनर हो गया, जिससे अंग्रेजों की प्रतिष्ठा बढ़ी।
3. अंग्रेजों की सैनिक दक्षता एवं हथिहारों की श्रेष्ठता का प्रदर्शन हुआ।

आलोचना :

सैनिक दृष्टि से बक्सर का युद्ध अंग्रेजों की बहुत बड़ी सैनिक सफलता थी। प्लासी के युद्ध मे सिराजुद्दौला की पराजय उसके अपने ही सेनानायकों के विश्वासघात के कारण हुई थी, परन्तु बक्सर में अंग्रेज शुजा के खेमे की सहायता के बिना ही विजयी हुए।

इसके अतिरिक्त शुजाउद्दौला, सिराजुद्दौला की भांति अनुभवहीन और मूर्ख नहीं था, बल्कि वह युद्ध और राजनीति दोनों में निपुण व्यक्ति था। ऐसे शासक के विरूद्ध विजय प्राप्त करने से कंपनी की प्रतिष्ठा में अभिवृद्धि हुई। इस अंतिम चुनौती पर विजय प्राप्त करने से बंगाल में अंग्रेजी सत्ता के प्रभुत्व के स्थापना की प्रक्रिया पूरी हो गई और अवध -इलाहाबाद क्षेत्र के द्वारा भी उनके प्रभाव विस्तार के लिए उन्मुक्त हो गए।

2. पानीपत का तीसरा युद्ध 1761 में लड़ा गया था। क्या कारण है कि इतनी अधिक साम्राज्य प्रंकपी लड़ाईयाँ पानीपत में हुई?

उत्तर:

वर्तमान हरियाणा के पानीपत में स्थित मैदान में तीन निर्णायक लड़ाईया हुई, जिन्होनें भारतीय इतिहास की धारा मोड़ दी, तीन सर्वाधिक साम्राज्य प्रंकयी लडाईया पानीपत में होने की मुख्य वजह यह रही कि अफगनिस्तान अथवा मध्य एशिया से भारत आने वाले आक्रमणकारियों के लिए दिल्ली के शासकों के लिए भी यह आवश्यक था कि बाहरी आक्रमणकारियों को दिल्ली पँहुचने से पहले ही रोक लिया जाए जिससे वे वापस लौटने पर मजबूर हो जाए। इसके लिए उनके पास युद्ध का सर्वाधिक उपयुक्त स्थान पानीपत का मैदान था।

पानीपत की पहली लडाई 29 अप्रैल 1526 को दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोदी और मध्य एशिया (फरगना) के मुगल आक्रमणकारी बाबर के बीच हुई। लोदी रणभूमि में मारा गया और दिल्ली व आगरा पर बाबर का अधिकार हो गया। इस तरह भारत में मुंगल राजवंश की नीव पड़ी।

पानीपत की दूसरी लड़ाई 5 नवम्बर 1556 को अफगान बादशाह सूर के हिन्दू सेनापति व मंत्री हेमू और मुगल बादशाह अकबर के बीच हुई। हेमू के पास अकबर से बडी सेना थी किन्तु अकबर ने उसे पराजित कर भारत में मुगल साम्राज्य को मजबूत किया। इस लडाई के परिणामस्वरूप अगले तीन सौ वर्षो तक दिल्ली का तख्त मुगलों के पास रहा।

पानीपत की तीसरी लड़ाई 14 जनवरी 1761 को अफगान आक्रमणकारी अहमदशाह अब्दाली और मुगल बादशाह आलम द्वितीय कि संरक्षक मराठों के बीच हुई। इस लडाई में मराठा सेनापति सदाशिवराव भाऊ अपने तमाम सेनापतियों के साथ मारा गया और इस तरह भारत में मराठा शक्ति का प्रभाव समाप्त हो गया। यह युद्ध इसलिए भी महत्त्वपूर्ण माना जाता है कि इसने न केवल मराठे बल्कि मुगलों की शक्ति भी खत्म कर दी जिसके परिणाम स्वरूप भारत में ब्रिटिश शक्ति के उदय का रास्ता साफ हुआ।

3. राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में डा. अम्बेडकर के महत्त्व का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर:

राष्ट्रीय आंदोलन के समर्पित कार्यकर्ता, दलितों के मसीहा भारतीय संविधान के जनक और सामाजिक परिवर्तन के प्रखर प्रवक्ता के रूप में भीमराव अम्बेडकर ने राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1920 के दशक में अम्बेडकर बैरिस्टर बनने के बाद सामाजिक-राजनीतिक आंदोलन में रूचि लेना आरंभ करते है और क्रमश: उनकी भूमिका अधिकाधिक सक्रिय होती जाती है। जुलाई 1924 में उन्होनें मुम्बई में एक संख्या 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' बनाई जिसका उद्देश्य अस्पृश्य लोगो की नैतिक तथा भौतिक उन्नति करना था। उन्होनें आन्दोलन की नीति अपनायी और अछूतों के लिए मंदिरों में प्रवेश तथा जनसाधारण के कुओं से पानी भरने के नागरिक अधिकारों को प्राप्त करने का प्रयत्न किया।

1930 में अम्बेडकर ने राष्ट्रीय राजनीति में प्रवेश किया उन्होने अछूतों के लिए अलग मताधिकार व्यवस्था की माँग की। उन्हें लंदन में हुए तीनों गोलमेज सम्मेलनों में अछूतों के प्रतिनिधि के रूप में बुलाया गया। 17 अगस्त 1932 को जब ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने साम्प्रदायिक निर्णय दिया तो उसमें दलित वर्गो के लिए अलग निर्वाचन मंडल का प्रावधान किया गया। इससे गांधी जी बहुत दुखी हुए और उन्होने इसे हटाने के लिए आमरण अनशन आरंभ कर दिया। अन्त में एक समझौता, जिसे प्राय: 'पूना पैक्ट'' या पूना समझौता कहते है, किया गया आगे उन्होने अनुसूचित जातीय संघ का एक अखिल भारतीय दल के रूप में गठन किया। सामाजिक परिवर्तन के लिए बाबा साहब ने धर्म परिवर्तन का सहारा लिया और अपने अनुयायियों के साथ बौद्ध बन गए। अपने देश से गहरे लगाव के कारण ही बाबा साहब को

© YOUR DREAM OUR MISSION YOUTH DESTINATION

ईसाई और इस्लाम से अधिक बौद्ध धर्म ने आकृष्ट किया।

स्वतन्त्रता की पूर्व संध्या पर कांग्रेस ने अम्बेडकर को संविधान सभा का सदस्य मनोनीत किया। उनका योगदान भारतीय संविधान को बनाने तथा उसका संविधान सभा में मार्गदर्शन के लिए तथा हिन्दु कोड विधेयक पारित कराने में अविस्मरणीय है। वर्तमान समय में भी बाबा साहेब को निम्न जातियों के उद्धाक के रूप में याद किया जाता है। उनमे से समाज के सबसे अंतिम पायदान पर खड़े दलित वर्ग का नेतृत्व बाबा साहेब अम्बेडकर ने किया।

भारतीय गणतन्त्र के नए संविधान में समस्त भारतीय नागरिकों के लिए समानता का अधिकार स्वीकार कर लिया गया है और अस्पृश्यता पूर्ण रूप से रोक दी गई है। 1955 के अस्पृश्यता अधिनियम के अनुसार इसका उल्लंघन करने पर दण्ड का प्रावधान है।

इस तरह हम पाते है कि हमारे राष्ट्रीय आंदोलन का जो मूलभूत लक्ष्य था देश के सभी धर्मो, जातीय एवं वर्गो के लोगो की समग्र मुक्ति, बाबा साहेब निम्न जातियों, दलितो व अस्पृश्यों के उत्थान एवं उन्हें सामाजिक संवैधानिक अधिकार दिलाने के लिए आजीवन कार्यरत रहें। इस प्रकार हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को उसके लक्ष्य तक पंहुचाने में बाबा साहेब का योगदान नि:संदेह अत्यधिक महत्त्वपूर्ण रहा। बाबा साहेब निम्न जातियों, दलितों व अस्पृश्यों के उत्थान एवं उन्हें सामाजिक संवैधानिक अधिकार दिलाने के लिए आजीवन कार्यरत रहे। इस प्रकार हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को उसके लक्ष्य तक पहुँचाने में बाबा साहेब का योगदान नि:संदेह अत्यधिक महत्त्वपूर्ण रहा बाबा साहेब ने दलितों में जो चेतना पैदा किया था उसी का प्रतिफल है कि आज दलित राजनीति सवर्ण राजनीति पर भारी पड़ रही है।

4. गांधार मूर्तिकला रोमनिवासियों की उतनी ही ऋणी थी जितनी कि वह यूनानियों की थी। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : गांधार क्षेत्र सिंध, काबूल और स्वात नदियों की धाराओं से घिरा प्रदेश था। सिकंदर के आक्रमण और उसके पश्चात् भारत के इस सीमांत क्षेत्र में भारतीय और यूनानी राज्यों के मध्य राजनीतिक, सास्कृतिक व व्यापरिक संबंध कायम हुए आगे चलकर डेमेट्रियस मिनाण्डर आदि यूनानी शासक यहाँ लगभग दो सौ वर्षो तक रहें। इस दौरान सीमांत क्षेत्र में मूर्तिकला की एक नई विधा सामने आई, जिसे गांधार शैली कहते है। गांधार क्षेत्र पर लगभग दो सौ वर्षो तक फारसी सम्राटों का आधिपत्य रहा।

गांधार कला पर विदेशी प्रभावों को लेकर विद्वानों में मतभेद है। कुछ विद्वान यहाँ की पारसी कृतियों में रोमन प्रभाव देखते है। जबकि कुछ अन्य को यूनानी प्रभाव दिखाई देता है। पर्सी ब्राउन जैसे कुछ विद्वान जहाँ इसे यूनानी प्रभाव की उत्पति मानते है, वहीं बेंजामिन रोलैण्ड आदि अनेक विद्वानों का मत है कि यह रोमन कला के अधिक निकट है। इनके अनुसार प्रथम बुद्ध प्रतिमा रोमन सम्राट आगस्टस की मूर्ति की नकल करते हुए निर्मित हुई। बावजूद इस पर अधिसंख्य विद्वानों का यहीं विचार है कि गांधार शैली यूनानी, रोमन और भारतीय कला की मिश्रित शैली है। इस कला का समय ईसा पूर्व से पाँच सौ ईसवीं तक मौजूद रहा। इसमें भगवान बुद्ध की मूर्ति को अपोलो के समान बनाया गया। मूर्तियों के कपड़े यूनानी ढंग के है। कपडों की सिलवटे, पारदर्शक वस्त्र, स्त्रियों के बाल बाधनें के ढंग आदि बौद्ध धार्मिक भावनाओं पर विश्वासों की अभिव्यक्ति भाव भंगीमाए यूनानी शैली में है। दूसरी तरफ धार्मिकता पर विश्वास भारतीयता लिए हुए हैं। गांधार के आसपास से मिली बौद्ध मूर्तियाँ, रोमन भित्ति स्तंभो तथा भारतीय स्तूप के स्तंभो के बीच की जान पड़ती है। पेशावर के आसपास बौद्ध संघारामों, स्तूपो, मूर्तियों के निर्माण में यूनानी एवं रोमन दोनों शैलियों का प्रभाव दिखता है। यूनानी प्रभाव के कारण गांधार शैली की प्रवृत्ति मानव शरीर के यथार्थ चित्रण की ओर थी। जिसमें अंग-प्रसंग, मांसपेशियों की एक ही हड्डी-पसली, मूछों आदि के सूक्ष्म प्रदर्शन पर विशेष ध्यान दिया था नासिकाएं यूनानी तर्ज पर सीधी और उन्नत है। इस शैली में बनी बुद्ध की कुछ प्रतिमाएं यूनानी देवता अपोलो की भाँति लगती है।

इस शैली के विषय में अनेक विद्वानों का मानना है कि इस तरह की मूर्तियों के निर्माण में यूनानी एवं रोमन सोच ने काम किया। इन उपलब्धियों में अनेक यूरोपीय विद्वानों का मत है कि यूनानी व रोमन संस्कृति ने भारतीय संस्कृति को अत्यधिक प्रभावित किया है। गांधार क्षेत्र चूंकि यूनान, रोम और भारत के मध्य संगम पर स्थित था, इसलिए यहाँ उत्पन्न मूर्तिकला पर तीनों संस्कृतियों का प्रभाव दिखाई देता है।

5. 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान बिहार मे जनभागीदारी का वर्णन कीजिए।

उत्तर

अगस्त प्रस्ताव और क्रिप्स मिशन के प्रस्ताव में अनेकानेक दोष होने के कारण कांग्रेस ने इन प्रस्तावों को अस्वीकार

© YOUR DREAM OUR MISSION YOUTH DESTINATION

कर दिया था। बदले में क्रिप्स मिशन ने भी कांग्रेस को स्पष्ट संकेत दे दिया था कि यदि उसके प्रस्ताव पर कांग्रेस विचार नहीं करती है तो भाविष्य में ब्रिटिश सरकार भारत में राजनीतिक गतिरोध दूर करने के लिए कोई प्रयास नहीं करेंगी अत: इन प्रस्तावों की असफलता के पश्चात् आंदोलन ही एकमात्र रास्ता बचा था जिससे राजनैतिक गतिरोध दूर किया जा सके। अंतत: विवश होकर कांग्रेस कार्य समिति ने जुलाई 1942 में वर्धा में एक प्रस्ताव पारित किया जिसका शीर्षक था–भारत छोड़ो आन्दोलन । 8 अगस्त 1942 को बम्बई अधिवेशन में कुछ संशोधनों के साथ काँग्रेस ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया तथा इसी अधिवेशन में इसी दिन से इसे लागू करने की घोषणा कर दी गई। इस अधिवेशन में महात्मा गाँधी ने कहा था कि मेरे जीवन का यह आतिम संघर्ष है और उन्होंने आंदोलनकारियों का नारा आह्वान करते हुए करो या मरो का नारा दिया। इसके पश्चात अनेक प्रमख नेताओं की गिरफ्तारी के बावजूद यह आन्दोलन समस्त भारत में फैल गया । स्वत:स्फूर्त नेतत्वहीन इस आन्दोलन का प्रभाव अन्य प्रान्तों की अपेक्षा बिहार में सर्वोपरि रहा। अन्य चोटी के नेताओं की गिरफ्तारी के साथ राजेन्द्र प्रसाद सहित बिहार के अन्य कई नेताओं को भी गिरफ्तार कर लिया गया, बावजूद इसके बिहार मे यह आन्दोलन भयंकर रूप धारण कर लिया। विरोध प्रदर्शन और सभाओं का क्रम शुरू हुआ शिक्षा संस्थाओं का छात्रों ने बड़े पैमाने पर बहिष्कार किया तथा अनेक सरकारी संस्थान पर राष्ट्रीय झण्डे फहराने की कोशिश की गई। इसी क्रम में 11 अगस्त 1942 को पटना में छात्रों के एक जलूस ने सचिवालय भवन पर झण्डा फहराने का प्रयास जिससे आक्रोशित हो पटना जिला के कलक्टर ॅ.ळ. आर्चर ने उन पर गोली चला. आदेश दे दिया परिणामस्वरूप रमाकान्त, उमाकान्त. सतीश प्रसाद सहित सात छात्र शादी हुए। इन शहीदों की कुर्बानी से सम्पूर्ण बिहार आंदोलित हो उठा। 12 अगस्त 1942 को पटना में इस बर्बर हत्याकाण्ड के विरुद्ध पूर्ण हड़ताल रखी गई। बिहार कांग्रेस द्वारा गाँधी मैदान में जगतनारायण लाल की अध्यक्षता में एक प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें संचार सुविधाओं को ठप्प करने तथा सरकारी कार्यों को शिथिल करने पर जोर दिया गया। यह आन्दोलन शहर से होता हुआ अधिकांश गाँवों तक फैल गया। जगह–जगह रेल–पटरियाँ उखाड़ दी गई, डाकघर पर हमला कर सरकारी खजाने लूट लिए गए, अन्य यातायात के साधन अवरुद्ध कर दिए गए, तार के लाइन काट दिए गए। आंदोलनकारियों ने इन क्रियाकलापों के अतिरिक्त हिंसात्मक साधनों का उपयोग करना भी शुरू किया गया। फतुहा के निकट आंदोलनकारियों द्वारा ब्रिटिश सेना के कई अधिकारियों एवं जवानों की हत्या कर दी गई। इस तरह की वारदातें अन्य कई जगहों पर भी हुई। इस कार्रवाई से तिलमिलाकर ब्रिटिश सरकार ने असंख्य लोगों को पकड़कर उन्हें भीषण सजाएँ दी एवं यह क्रम जारी रखा।

इस आन्दोलन में लोकनायक जयप्रकाश सरीखे अनेक समाजवादियों ने भी अग्रणी भूमिका निभाई। जयप्रकाश के ही नेतृत्व में नेपाल में युवकों को छापामार युद्ध की शिक्षा देने हेतु एक केन्द्र की स्थापना की गई। यहीं पर आजाद दस्ता नामक एक सशस्त्र दल भी बनाया गया जिसके अखिल भारतीय केन्द्र व बिहार प्रान्तीय कार्यालय संगठित किए गए। आजाद दस्ते का गठन विशेष रूप से सरकार के विरुद्ध तोड़–फोड की कार्रवाइयों के लिए किया गया था ताकि युद्ध कार्यों में सरकार को बाधा पहुंचाई जा सके। नेपाल में आयोजित श्आदाज दस्ताश से प्रेरित होकर बिहार में भागलपुर तथा पूर्णिया में भी इसी तरह के संगठनों की स्थापना की गई। 1943 के अंत में आजाद दस्ते की सक्रियता में कमी आ गई। क्योंकि इससे संबंधित नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।

इस प्रकार बिहार में भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रभाव काफी उग्र रहा।

6(A)मौर्यकला पर प्रकाश डालिए तथा बिहार मे इसके का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर

बिहार में मौर्यकाल से कला की प्रगति के निश्चित और स्पष्ट साक्ष्य मिलने लगते हैं। इस युग में कला के दो रूप मे मिलते हैं – (i) राजकला (ii) लोककला।

राजकला का सर्वप्रथम उदाहरण चंद्रगुप्त मौर्य का राजप्रसाद है जिसके अवशेष पटना के निकट कुम्हरार गाँव के समीप प्राप्त हुए हैं। यहाँ स्तंभ युक्त सभाभवन का हॉल मिला है जिसके स्तम्भ पत्थर के बने थे जिस पर चमकदार पॉलिश की गई थी। फाहयान तथा एरियण जैसे विदेशी यात्रियों एवं इतिहासकारों ने इस राजप्रसाद को विश्व भर में अनुपम एवं अद्वितीय बताया जिससे यह सिद्ध होता है कि राजाश्रय में विकसित स्थापत्यकला विश्वस्तरीय एवं उत्कृष्टतम थी। राजप्रासाद एवं पाटलिपुत्र के चारों ओर बनी लकडी की प्राचीर काष्ठकला एवं प्रस्तरशिल्प का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करता है

राजकला के सर्वोत्कृष्ट नमूने चुनार के बलुआ पत्थर के बने अशोक के एकाश्मक स्तंभ हैं जो शिल्पकला तथा

© YOUR DREAM, OUR MISSION YOUTH DESTINATION

इंजीनियरी कौशल का अनोखा उदाहरण है। इन स्तंभों के दो मुख्य भाग हैं – स्तंभ यष्टि या गावदुम लाट और शीर्ष भाग। इनके शीर्ष पर पशुओं की मूर्तियाँ हैं जिनके नीचे उल्टे हुए कमल के फूल के समान आसन है। सारनाथ स्तंभ पर निर्मित सिंह की आकृति भारतीय कला की अनुपम कति है। इसकी शालीनता व यथार्थता अशोक की जीवन नीति के अनुरूप है। ऐसे स्तंभ लौरिया नंदनगढ़, लौरिया अरेराज, रामपुरवा एवं बसाढ़ में मिले हैं। पशु–मूर्तियों में नटुआ बैल, सिंह, हाथी, घोड़ा आदि हैं।

स्तंभों की चमकीली पॉलिश, घंटाकृति, तथा शीर्षभाग में पशु की आकृति को पाश्चात्य विद्वानों ने ईरान की प्रेरणा मानी है। भारतीय विद्वानों के अनुसार महाभारत एवं आपस्तंभ सूत्र से पता चलता है कि चमकीली पॉलिश की कला भारत में पहले से ज्ञात थी, घंटाकृति अवांगमुखी कमल है, पशुओं की आकृति सिंधु सभ्यता से प्रवाहमान परंपरा के अनुकूल है।

ईरानी स्तंभ नालीदार एवं अलग–अलग पाषाण–खंडों से बने हैं जबकि अशोक स्तंभ सपाट एवं एकाश्मक है।

अशोक ने स्तूप, चौत्य के निर्माण को भी संरक्षण दिया । साँची एवं भारहूत के स्तूप उल्लेखनीय हैं।

चट्टानों को काटकर कंदराओं के निर्माण के द्वारा मौर्य सम्राटों ने एक नवीन शैली का सूत्रपात किया। बराबर एवं नागार्जुनी पहाड़ियों में गुहा विहार बनाए गए जिनके भीतर की चमकीली पॉलिश उल्लेखनीय है।

विवेच्य काल में विकसित लोककला का ज्ञान पाषाण निर्मित यक्ष–यक्षिणी की मर्तियों द्वारा होता है ।

पटना सिटी के दीदारगंज से प्राप्त चामरग्राहिणी यक्षिणी की मूर्ति उल्लेखनीय हैं। इन मूर्तियों को सभी ओर से तराश कर तैयार किया गया है। इनका निर्माण हल्के भूरे रंग के बलुआ पत्थर से हुआ है। ये अतिमानवीय महाकाय मूर्तिया खुले आकाश के नीचे स्थापित की जाती थीं । मांसपेशियों की बलिष्ठता और दृढ़ता उनमें जीवंत रूप में व्यक्त हुई है। उनके दर्शन का प्रभाव सम्मुखीन है। इस शैली के अंतर्गत बनी कुछ मूर्तियाँ जैसे, लोहानीपुर से नग्न जैन तीर्थंकर की मूर्ति, बुलंदी बाग से प्राप्त धारी गतिमान डमरूधारी भी उल्लेखनीय हैं।

6(B) स्वामी सहजानंद के विशेष संदर्भ में बिहार में हुए कृषक आंदोलनों पर आलोचनात्मक टिप्पणी कीजिए।

उत्तर

बिहार में हुए कृषक आंदोलन ब्रिटिश शासन एवं उसके संरक्षण में पल रह जमींदारों और देशी रजवाड़ों के आर्थिक शोषण संजाल के विरुद्ध केन्द्रित था। जमींदारी व्यवस्था में जमींदारों को भूस्वामी बना दिया गया साथ ही लगान की दर अधिकाधिक होती थी एवं लगान वसूली के तरीके भी कठोर होते थे। कषि–सुधार में जमींदारों एवं सरकार की रुचि नगण्य होती थी। आपातकाल में राहत एवं छूट की व्यवस्था भी नहीं होती थी। महाजनी ऋण जाल, भ्रष्ट पुलिस–प्रशासन, खर्चीली व जटिल न्याय–प्रणाली ने किसानों का जीवन और भी दूभर बना दिया था और आंदोलन ही एक मात्र उपाय शेष था। इनके अतिरिक्त और भी कारणों ने समय–समय पर कृषकों को आंदोलन के लिए प्रेरित किया जैसे–कृषि का अलाभकर वाणिज्यीकरण, आर्थिक मंदी, वामपंथ का उभार आदि ।

बिहार में किसान आंदोलन की शुरुआत 1917 के चम्पारण कृषक आंदोलन से हुई। यहाँ महात्मा गाँधी के प्रथम सत्याग्रह द्वारा किसानों को निलहे गोरे जमींदारों की अवैध वसूली एवं तिनकठिया पद्धति से मुक्ति मिली।

चम्पारण की सफलता ने बिहार के अन्य क्षेत्रों के किसानों को भी शोषण के विरुद्ध लड़ने की प्रेरणा मिली। 1919 के मध्य में स्वामी विद्यानंद के नेतृत्व में दरभंगा राज के विरुद्ध आंदोलन संगठित हुए। राज द्वारा कुछ माँगों को मान लिए जाने के कारण कालांतर में यह आंदोलन शिथिल पड़ गया ।

मुंगेर में 1922–23 ई. में 'किसान सभा' का गठन शाह मोहम्मद जुबैर ओर श्रीकृष्ण सिंह द्वारा किया गया, परन्तु किसान आन्दोलन का निर्णायक मोड़ दिया स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने, जिन्होंने 4 मार्च, 1928 ई. को किसान सभा की औपचारिक ढंग से स्थापना की। 1929 ई. में इस सभा की गतिविधियाँ काफी बड़े पैमाने पर आरम्भ हुई। इसी वर्ष सरदार वल्लभभाई पटेल ने भी बिहार की यात्रा कर किसानों में चेतना जगाने का कार्य किया। इस आंदोलन की बढ़ती हुई लोकप्रियता से एक ओर जमींदारों का वर्ग चिंतित और सतक हुआ तो दूसरी ओर इसका दमन करने के लिए सरकार पर दवाब डालने की कोशिशें भी आरम्भ हुई। इस उद्देश्य से एक राजनीतिक दल श्युनाइटेड पॉलिटिकल पार्टीश के नाम से संगठित हुआ। किसान सभा द्वारा 1933 ई. में एक जाँच समिति का गठन किया गया जिसने किसानों की दयनीय दशा के प्रति ध्यान आकर्षित करने का काम किया। किसान सभा की लोकप्रियता में निर्णायक वृद्धि इसी काल में हुई। 1936 ई. में इसकी सदस्यता 250000 तक पहुँच गयी थी। कुछ समय के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और किसान सभा के बीच तालमेल भी बना रहा। 1937 ई. के चुनावों के पूर्व दोनों में समझौता हुआ और कांग्रेस ने अपने एक

YOUR DREAM OUR MISSION YOUTH DESTINATION

चुनावी घोषाणा-पत्र में किसानों की समस्याओं पर चर्चा की। मगर चुनावों के बाद जब बिहार में कांग्रेसी मंत्रिमंडल की स्थापना हुई तो किसान सभा के साथ मतभेद प्रारंभ हो गये, कारण किसानों की समस्याओं का समाधान करने में इस मंत्रिमंडल ने कोई अभिरुचि नहीं ली। एक तो इस प्रान्तीय सरकार की शक्ति नाम मात्र की थी, दूसरी बात, कांग्रेसी-नेतृत्व का एक वर्ग उन समस्याओं के समाधान के लिए उत्सुक नहीं था। इस तनाव के कारण चम्पारण, सारण और मुंगेर की जिला कांग्रेस समितियों ने अपने सदस्यों को किसान सभा के जुलूसों में भाग लेने से रोक दिया।

मई, 1930 ई. में चौकीदारी विरोधी अभियान पूरे बिहार में बड़ा सफल रहा। 1931 ई. में जहानाबाद में किसानों के एक सम्मेलन में जमींदारों द्वारा किसानों के दमन की निन्दा की गई। बिहार में कांग्रेस ने राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में एक कृषक जाँच समिति की स्थापना की, जिसके अन्य सदस्य श्रीकृष्ण सिंह, अब्दुल बारी, विपिन बिहारी वर्मा, बलदेव सहाय, राजेन्द्र मिश्र, राधागोविन्द प्रसाद और कृष्णा सहाय थे। 1932 ई. में सविनय अवज्ञा आन्दोलन के क्रम में किसान अधिक हिंसात्मक हो गए थे।

किसान-सभा के संगठन को बिहार में फैलाने में स्वामी सहजानन्द सरस्वती को कार्यानन्द शर्मा, राहुल सांस्कृत्यायन, पचानन शर्मा और यदुनंदन शर्मा जैसे बहुत से वामपंथी नेताओं का सहयोग मिला। 1938 ई. में पटना में एक बड़ा प्रदर्शन हुआ, जिसमें लगभग एक लाख किसानों ने हिस्सा लिया। 1935 ई. में किसान सभा जमींदारी उन्मूलन का प्रस्ताव पारित कर चुकी थी। किसानों की दूसरी माँग थी-गैरकानूनी वसूलियों और काश्तकारी की बेदखली का अंत तथा वकाश्त जमीन की वापसी । वकाश्त जमीन का मुद्दा किसान सभा और कांग्रेसी मंत्रिमण्डल के बीच विवाद का मुद्दा बना फलस्वरूप बड़हिया टाल के इलाके के किसानों द्वारा जमींदारी उन्मूलन की माँग को लेकर एक बृहत् आन्दोलन आरम्भ किया गया। इसमें कार्यानंद शर्मा की भूमिका काफी महत्त्वपूर्ण रही। गया के यदुनन्दन शर्मा एवं अन्नवारी में राहुल सांकृत्यायन ने किसान आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया । कांग्रेस के उदासीन रहने के कारण अब किसानों का झुकाव साम्यवादी दल के प्रति हुआ। स्वयं स्वामी सहजानंद ने भी साम्यवाद में अभिरुचि दिखायी। वकाश्त जमीन के सवाल पर आन्दोलन 1938-39 ई. तक अपने शीर्ष पर पहुँच चुका था, लेकिन अगस्त, 1939 ई. में सरकार द्वारा घोषित अनेक सुविधाओं, नए कानूनों और लगभग 600 कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी से यह आन्दोलन थम सा गया। कुछ इलाकों में 1945 ई. किसानों ने फिर अंगड़ाई ली और उनका आन्दोलन तब तक जारी रहा जब तक जमींदारी प्रथा खत्म नहीं हो गयी।

यद्यपि किसान आन्दोलन आजादी पूर्व तक अपने उद्देश्यों का प्राप्त करने में सफल नहीं हो सका, न तो जमींदारी उन्मूलन हो सका और न ही ग्रामीण ऋणग्रस्तता का स्थायी समाधान ही हो सका। लेकिन इसने कृषकों में अपने अधिकारों के प्रति जागरुकता और वर्ग चेतना का संचार किया साथ ही आजादी बाद होने वाले जमींदारी उन्मूलन समेत कृषि सुधारों तथा भूमि सुधारों की पृष्ठभूमि तैयार करने में अहम भूमिका निभाई।

स्वामी सहजानंद की आलोचना यह कहकर की जाती है कि वे ब्रिटिश सरकार के साथ-साथ जमींदारों और जमींदारी प्रथा का भी विरोध कर रहे थे लेकिन राष्ट्रीय आंदोलन के समय जमींदारों को अपना दुश्मन बनाना समय की माँग नहीं थी यही कारण था कि कृषक हित में जमींदारों के विरुद्ध किसी बड़े कदम को उठाने से कांग्रेस परहेज करती रही फलत: कांग्रेस और किसान सभा में मतभेद होते रहे। कांग्रेस जमींदार समर्थक नहीं थी अगर होती तो आजादी बाद जमींदारी उन्मूलन नहीं किया जाता।

यह सही है कि सहजानंद ब्रिटिश राज के साथ-साथ जमींदारों के विरुद्ध भी आंदोलन चला रहे थे जो राष्ट्रीय आंदोलन की रणनीति से मेल नहीं खाती थी लेकिन उनका मूलभूत उद्देश्य था-शोषित-पीड़ित किसानों की मुक्ति। अत: उनके आंदोलन को भुलाया नहीं जा सकता। किसान आंदोलन में उनकी भूमिका इस अर्थ में महत्त्वपूर्ण है कि उन्होंने कृषकों के आंदोलन को सांगठनिक एवं अखिल भारतीय रूप प्रदान किया।

6(c) उन परिस्थितियों का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए जिनके कारण भारत का बांग्लादेश के उदय में निर्णायक भूमिका का निर्वहन करना पड़ा।

उत्तर

बांग्लादेश, तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान, भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं भाषाई दृष्टि से बिल्कुल भिन्न पाकिस्तान के साथ जोड़ दिया गया। पाकिस्तान के शासकों ने पूर्वी पाकिस्तान के लोगों को कभी बराबरी का दर्जा नहीं दिया। इस प्रकार पश्चिम द्वारा पूर्वी भाग पर नस्ली दमन और शोषण धीरे-धीरे उजागर हुआ। अस्मिता और सांस्कृतिक स्वतंत्रता के प्रति जागरूकता संबंधी संघर्ष जो 1960 के दशक के छात्र आंदोलन के साथ शुरू हुआ था वह 1969 के असहयोग

YOUR DREAM, OUR MISSION YOUTH DESTINATION

आंदोलन के जन आंदोलन के समय तेज हुआ। वर्ष 1970 के चुनावों में जन नेता शेख मुजीबुर्रहमान को सम्पूर्ण जीत हासिल हुई। मुजीब के नेतृत्व वाली आवामी लीग पूर्वी पाकिस्तान की 160 सीटों में से पूरी 160 सीटें जीतीं। शेख मुजीबुर्रहमान पाकिस्तानी संसद (Pakistan National Assembly) के बहुमत वाले दल के नेता चुने गए, लेकिन सैनिक शासकों ने आवामी लीग को सरकार नहीं बनाने दी तथा जुल्फिकार अली भुट्टो के साथ मिलकर एक षड्यंत्र रचा। मेजर जनरल जियाउर्रहमान ने बांग्लादेश की स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। शेख मुजीबुर्रहमान की तरफ से 26 मार्च, 1971 को बांग्लादेश नामक एक नए राष्ट्र का निर्माण हेतु वहां के लोगों ने अपने को एक खूनी जंग में झोंक दिया। पाकिस्तानी सेना ने मासूम बांग्लादेशियों पर आक्रमण कर कत्लेआम शुरू कर दिया तथा पूर्वी पाकिस्तान स्वतंत्रता क्षेत्र के लोगों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। बांग्लादेश की एक निर्वासित सरकार स्थापित की गई। बांग्लादेशी नौजवानों ने श्मुक्तवाहिनीश के बैनर तले एक साहसिक गुरिल्ला युद्ध प्रारंभ किया। भारत सरकार ने 'मुक्तीवाहिनी' के गुरिल्लाओं को ही नहीं, बल्कि हजारों बांग्लादेशी शरणार्थियों को भी हर तरह का नैतिक, वित्तीय एवं अन्य आवश्यक सहायता प्रदान की।

उसी समय पाकिस्तान ने भारत की पश्चिमी सीमा पर आक्रमण कर दिया। भारत के सामने पाकिस्तान की सेना पर जवाबी हमला बोलने के सिवा कोई और विकल्प नहीं बचा था। अंततः 16 दिसम्बर, 1971 को 90,000 से अधिक पाकिस्तानी सैनिकों ने हथियार डाल दिए और बांग्लादेश एक स्वतंत्र राष्ट्र बन गया।

7. 'धर्म पर परोहितों का आधिपत्य एवं धार्मिक कर्मकांडों की प्रधानता ही वैदिकोत्तर काल की पहचान बन गई थी।' इसकी समालोचना करें।

उत्तर

उत्तर-वैदिककाल में आर्यों के धार्मिक जीवन एवं आस्थाओं में भी महान परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं। इस समय में धार्मिक आस्थाएं भी तत्कालीन भैतिक जीवन से प्रभावित थीं। वैदिक काल का सीधा-सादा धार्मिक जीवन अब आंडबरपूर्ण, रूढ़िवादी और कर्मकांडप्रधान बन गया। धार्मिक जीवन पर पुरोहितों का वर्चस्व स्थापित हो गया। एक अर्थ में वे ही धर्म के मालिक बन बैठे। उत्तर-वैदिककाल के अंतिम चरण में पुरोहितों की प्रभुता एवं कर्मकांडों की निस्सारता के विरोध में उननिषदों ने आवाज उठाई।

ऋग्वेद में जिन प्रमुख देवताओं (इंद्र, वरूण, अग्नि, मित्र इत्यादि) को प्रधान माना जाता था. उनका स्थान अब गौण हो गया। उनकी जगह नए देवताओं यथा शिव या रूद्र, विष्णु या नारायण, प्रजापति या ब्राह्मा ने ले लिया। देवताओं की संख्या में भी वृद्धि हुई और उनमें से अनेक दिग्पाल, गंधर्व, यक्ष आदि के रूप में (देवताओं के सहायक) सामने आए। पितृसत्तात्मक तत्वों के सबल होने से उषा एवं अदिति जैसी देवियों का महत्व भी कम हो गया। उनकी जगह अब विभिन्न यक्षिणियों एवं अप्सराओं का आविर्भाव हुआ। देवताओं में सबसे प्रमुख स्थान प्रजापति को दिया गया। उसे विश्व का सृष्टिकर्ता माना गया। प्रजापति द्वारा वराह रूप में पृथ्वी धारण करने तथा कूर्म बनने की कल्पना प्रचलित हुई जिससे आगे अवतारवाद को बढ़ावा दिया। रूद्र (पशुओं का देवता) शिव या पशुपति कहलाने लगे। विष्णु पालनकर्ता के रूप में प्रतिष्ठित हुए। इस प्रकार, उत्तर-वैदिककाल में त्रिमूर्ति की भावना का विकास हुआ। ब्रह्मा, विष्णु और महेश ही प्रमुख देवता बन गए। सामाजिक वर्गीकरण के साथ-साथ कुछ देवताओं का संबंध वर्णविशेष से स्थापित हो गया। उदाहरणस्वरूप पूषन्, जो पहले मवेशियों का देवता था, अब मुख्यतया शूद्रों का देवता बन गया। प्रो. रामशरण शर्मा के अनुसार, उत्तर-वैदिककाल में मूर्तिपूजा की प्रथा भी आरंभ हो चुकी थी परन्तु मूर्तिपूजा के निश्चित पुरातात्विक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। साहित्यिक स्रोतों में भी मूर्तिपूजा का स्पष्ट उल्लेख इस समय नहीं मिलता। यहां इस बात का उल्लेख किया जा सकता है कि यद्यपि मूर्तिपूजा के पुरातात्विक साक्ष्य नहीं मिलते हैं तथापि अतरंजीखेड़ा से प्राप्त कुछ वृत्ताकार अग्निकुंड और कौशांबी से मिला यज्ञ वेदी इन कर्मकांडों की पुष्टि करते हैं।

कर्मकाण्डीय जटिलता में वृद्धि

धार्मिक क्षेत्र में जो सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन आया, वह था पुरोहितों का प्रभाव और कर्मकाण्डों की जटिलता में वृद्धि। समाज के अनुत्पादी वर्गो-ब्राह्मणों एवं क्षत्रियों ने बिना श्रम किए ही उत्पादन में हिस्सा लेने और समाज पर अपनी श्रेष्ठता बनाए रखने के लिए आपस में समझौता कर लिया। ब्राह्मण अपनी धार्मिक श्रेष्ठता और क्षत्रियों के प्रभाव को बनाए रखने के लिए नए हथकंडों का सहारा लेने लगे। इसके बदले उन्हें धन एवं प्रतिष्ठा मिली। क्षत्रिय ब्राह्मणें के संरक्षक बन गए। ब्राह्मणों ने भी धन प्राप्त करने एवं राजा की शक्ति को स्थापित और सद्द करने के लिए यज्ञों का आयोजन आवश्यक बना दिया। फलस्वरूप, इस युग में तप और भक्ति की जगह यज्ञ एवं बलि पर ज्यादा बल दिया

जाने लगा। यद्यपि देवताओं की पूजा अब भी उसी उद्देश्य से की जाती थी, जिस उद्देश्य से ऋग्वैदिक काल में, तथापि अब पूजा की विधि बदल गई। यद्यपि देवताओं की स्तुति में अब भी मंत्रोच्चारण होते थे, तथापि अब मंत्रों की शक्ति से अधिक यज्ञ और बलि की शक्ति पर महत्व दिया गया। यज्ञों के संपादन के लिए अब पुरोहितों का सहयोग आवश्यक बन गया। चाहे यज्ञ छोटे हों या बड़े, पुरोहितों की सहायता के बिना इन्हें पूरा नहीं किया जा सकता था ये यज्ञ बलिप्रधान और खर्चीले थे। इन यज्ञों को संपादित करवाने के निमित्त पुरोहितों को बहुत अधिक दान-दक्षिणा प्राप्त होता था। उदाहरणस्वरूप, राजसूया यज्ञ (अभिषेक) करवाने वाले प्रधान पुरोहित को 2 40,000 गाएं दान में दी जाती थीं। इसके साथ-साथ उन्हें सोना, वस्त्र एवं सामान (संभवत: जमीन) भी दान में दिए जाते थे। इस दान के बल पर पुरोहित समाज के सविधाभोगी और संपन्न वर्ग में आ गए। साहित्यक ग्रंथों में इस समय जिन प्रमुख यज्ञों का उल्लेख मिलता है वे हैं वाजपेय, राजसूय और अश्वमेध। ये सारे यज्ञ राजाओं (क्षत्रियों) के लिए ही सुरक्षित रखे गए। यद्यपि इन यज्ञों का उद्देश्य राजा की शक्ति और उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि करना था, तथापि साथ-साथ इनका उद्देश्य कृषि उत्पादन को भी बढ़ाना था। अत: ब्राह्मणों और क्षत्रियों दोनों ने कर्मकांडों को बढ़ावा दिया। क्षत्रियों द्वारा कर्मकांडों को बढ़ावा देने का एक अन्य कारण यह था कि श्इनके माध्यम से वे आर्य सभ्यता की सीमा पर रहने वाले अनार्य प्रमुखों के बीच अपना प्रभुत्व बढ़ा पाते थे।श इसकी पुष्टि अथर्ववेद तथा पंचविंशब्राह्मण से होती है जहां मगध के व्रात्य मुखिया को वैदिक समाज में प्रवेश देने के लिए कर्मकांड का आयोजन किया गया है। ये यज्ञ बहत अधिक खर्चीले थे तथा लंबे समय तक चलते रहते थे। यज्ञों के साथ-साथ विभिन्न संस्कारों के पालन पर भी बल दिया गया। ये संस्कार गर्भाधान से मृत्युपर्यन्त होते रहते थे। इन सभी ने पुरोहितों का प्रभाव समाज पर स्थापित कर दिया। उनकी संख्या और श्रेणियों में भी वृद्धि हुई। अब उनमें से कुछ होतृ, उद्गाता, अर्घायु के नाम से विख्यात हुए। वे राजा के प्रमुख सलाहकार भी बन गए।

नई विचारधारा का उदय

उत्तर-वैदिक काल युग में जहां एक तरफ यज्ञ, बलि एवं कर्मकांडों की प्रधानता बढ़ती जा रही थी, वहीं एक नई दार्शनिक विचारधारा का भी उदय हुआ, जिसने यज्ञों और बलियों को निरर्थक बताकर तप एवं ज्ञान का मार्ग सुझाया। इस विचारधारा ने ब्राह्मणों के कर्मकांड पर गहरा आघात कर छठी शताब्दी ई.पू. के धर्मसुधार आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार कर दी। अरण्यकों में यज्ञ बलि की अपेक्षा तप के महत्व को बताया गया। इसके अनुसार शरीर को तपस्या द्वारा कष्ट देकर ही परमब्रह्म या मोक्ष की प्राप्ति हो सकती थी। तपमार्ग के ठीक विपरीत उपनिषदों ने ज्ञानमार्ग का रास्ता दिखाया। उपनिषदीय विचारकों ने यज्ञ आदि अनुष्ठानों को ऐसी कमजोर नौका बताया है, जिसके द्वारा यह भवसागर पार नहीं किया जा सकता। उन्होंने इस उद्देश्य के लिए इंसान को जीवन के चक्र से मोक्ष दिलाने के लिए ज्ञानमार्ग का प्रतिपादन किया। उपनिषदों ने अद्वैतवाद का सिद्धान्त प्रतिपादित किया।

आत्मज्ञान द्वारा ही परमब्रह्म या मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है। षड्दर्शन का बीजारोपण भी इसी काल में हुआ। इन नए विचारों ने धार्मिक क्षेत्र में क्रांति ला दी। अगर हम ऋग्वेदिक काल और उत्तर-वैदिककाल का तुलनात्मक अध्ययन करें, तो यह बात बिलकुल स्पष्ट हो जाती है कि आर्यों की प्रारंभिक सभ्यता में जिन मूल तत्वों की स्थापना हुई थी, उत्तर-वैदिक काल में उनमें परिवर्तन, संवर्धन एवं संशोधन हुए। ये नए तत्व प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के आधारभूत तत्व बन गए।

8. हिन्दुत्व अवधारणा का परीक्षण कीजिए। क्या यह धर्मनिरपेक्षवाद का विरोधी है?

उत्तर

हिन्दुत्व एक पंथ, एक पहचान और सिर्फ अवधारणा पर आधारित एक विचार है। हिन्दुत्व हिन्दू धर्म के राजनीतिक अनुयायियों की दृष्टि में भारत को सिर्फ हिन्दू राष्ट्र के रूप में देखने की एक नवीन अवधारणा है। हिन्दुवादियों के अनुसार हिन्दुत्व कोई उपासना पद्धति नहीं, बल्कि एक जीवन शैली है। वीर सावरकर कहते हैं कि हिन्दुवाद एक वाद के तौर पर धर्मशास्त्र है, और हिन्दुत्व मात्र एक शब्द नहीं, बल्कि अपने में एक सम्पूर्ण इतिहास है। हिन्दू एक जाति है, जिसका सामुदायिक नाम ही हिन्दू राष्ट्र है। जबकि स्वामी विवेकानन्द के अनुसार हिन्दुत्व का मूलमंत्र है-'जिओ और जीने दो' तथा 'बसुधैव कुटुम्बकम'। उनके लिए हिन्दुत्व एक सागर है, जिसमें विविध मार्गों से बहने वाली हजारों नदियां आकर एकरूपी हो जाती हैं।

हिन्दुत्व आन्दोलन के प्रमुख विचार

हिन्दुत्ववादी कहते हैं कि हिन्दू शब्द के साथ जितनी भी भावनाएं और पद्धतियां, ऐतिहासिक तथ्य, सामाजिक

YOUTH DESTINATION

आचार-विचार वैज्ञानिक व आध्यात्मिक अन्वेषण जुड़े हैं, वे सभी हिन्दुत्व में समाहित हैं।

हिन्दूवादियों के अनुसार, हिन्दुत्व किसी भी धर्म व उपासना पद्धति के खिलाफ नहीं है।

वे भारत में सुदृढ़ राष्ट्रवाद और नवजागरण लाना चाहते हैं। उसके लिए हिन्दू संस्कृति लाना जरूरी है। हिन्दुत्व का बढ़ना जरूरी है।

अगर समृद्ध हिन्दू संस्कृति का संरक्षण न किया गया तो विश्व से ये धरोहरें मिट जाएंगी। आज भोगवादी पश्चिमी संस्कृति से हिन्दू संस्कृति को बचाने की आवश्यकता है।

हिन्दुत्व गाय पशु का संरक्षण करता है। वह इसाई एवं इस्लामिक संस्कृति को इनके संरक्षण के खिलाफ मानता है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, हिन्दुत्व कोई धर्म नहीं है यह एक ऐसा सिद्धान्त है जो सभी धर्मों को समभाव से देखता है।

अम्बेडकर के अनुसार, कोई भी देवता दलितों के कारण भ्रष्ट नहीं होता है, अछूतों के लिए अलग से मंदिर की कोई आवश्यकता नहीं है। हिन्दुत्व की परिभाषा जो सवर्णों के लिए है वही दलितों के लिए भी है। दलित, हिन्दू धर्म का एक अभिन्न हिस्सा है। लेकिन छद्म हिन्दूवादी देश और दलित दोनों के लिए खतरा है।

हिन्दुत्व के बारे में अन्य धर्म/पन्थों के विचार

मुसलमानों के अनुसार, हिन्दुत्व एक ऐसी कट्टर विचारधारा है, जिसके मूल में मुसलमानों का विरोधी होना ही उसकी पहचान है।

ईसाईयों के अनुसार हिन्दुत्व एक ऐसी विचारधारा है जो दूसरे पंथ के लोगों को हिन्दू धर्ममें धर्मान्तरित करने का प्रयास करता है।

हिन्दुत्व एक फांसीवादी विचार है जो यहूदियों के विचारों पर आधारित है और जर्मनी के नाजीवाद का समर्थन करता है।

संक्षेप में हिन्दुत्व सिर्फ एक राजनीतिक विचारधारा है जो भारत के आधुनिक लोकतांत्रिक धर्मनिरपेक्ष मूल्यों के खिलाफ है। आधुनिक भारत भी पुरातन धर्मनिरपेक्ष भारत का ही सनातनीय रूप है और इस पर विवाद वही लोग कर सकते हैं जो भारत को एक लोकतांत्रिक देश के रूप में विकसित नहीं होने देना चाहते हैं। यह भी स्पष्ट होना चाहिए कि आज जो हिन्दुत्व की ताकतें बढ़ी हैं उसकी वजह हिन्दुस्तान में धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा को यहां वास्तविक अर्थ में लागू न करना है। धर्म और धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा भिन्न-भिन्न हैं, और उसे आपस में मिलाया नहीं जाना चाहिए। धर्मनिरपेक्षता का मतलब सिर्फ और सिर्फ धर्म का राज्य से पूर्ण अलगाव है। नैतिक आध्यात्मिक मूल्यों के लिए धर्मनिरपेक्ष राजनीति को धर्म पर निर्भर नहीं होना पड़ता है।

धर्मनिरपेक्ष राज्य अतीत के सभी सकारात्मक मूल्यों को समेटे रहते हैं और वह जनता की भौतिक, सांस्कृतिक, नैतिक, आध्यात्मिक जरूरतों को पूरा करता है। जनता की प्रगति और विकास के लिए यह जरूरी है कि धर्मनिरपेक्ष, लोकतान्त्रिक मूल्यों की दृढ़ता से रक्षा की जाए। जहां तक धर्म की बात है वह लोगों का व्यक्तिगत मामला है, उसमें राज्य द्वारा अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए। लोगों को अपने विश्वास के हिसाब से धार्मिक व्यवहार करने की छूट होनी चाहिए। किसी भी पंथ या सम्प्रदाय को दूसरे पंथ या सम्प्रदाय पर अपने विश्वास नहीं थोपना चाहिए। हिन्दू धर्म में भी इसी प्रकार की चर्चा की गई है जो कि आधुनिक हिन्दुत्व की राजनीति में कहीं नहीं शामिल है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हिन्दुत्व की अवधारणा धर्मनिरपेक्षवाद नहीं है।

उच्चतम न्यायालय ने 1995 में अपने एक निर्णय में कहा था कि 'हिन्दुत्व धर्म नहीं है, वो जीने का एक तरीका है' अर्थात् उच्चतम न्यायालय ने हिन्दुत्व के धर्मनिरपेक्षवाद की अवधारणा के पक्ष में मुहर लगाया। लेकिन वर्तमान समय में हिन्दुत्व को लेकर जो नकारात्मक राजनीति और छवि बन रही है, जगह-जगह हिन्दुत्व के नाम पर लोगों की हत्या, गाय की रक्षा के नाम पर भीड द्वारा इन्सानों की हत्या तथा राजनीतिक लाभ के लिए धार्मिक हिन्दू-अधार्मिक हिन्द में विभाजन को विघटनकारी विचारों में वृद्धि को देखते हुए उच्चतम न्यायालय ने हाल ही में कहा था कि हिन्दत्व शब्द पर एक बार पुनः पुनर्विचार करने की आवश्यकता है।

9. सहिष्णुता एवं प्रेम की भावना न केवल अति प्राचीन समय से ही भारतीय समाज का एक रोचक अभिलक्षण रही है, अपितु वर्तमान में भी यह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। सविस्तार स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

प्राचीनकाल से ही भारतीय समाज में सांस्कृतिक तथा धार्मिक विविधता तथा भिन्नताएं विद्यमान रही हैं, किंतु इतनी

विभिन्नताओं के बावजूद भारतीय समाज में प्रारंभ से ही एकता स्थापित रही है। ऐसा भारतीय समाज में सहिष्णुता एवं प्रेम की भावना के उपस्थित होने के कारण की सम्भव हो पाया है।

गौरतलब है कि अति प्राचीन काल में स्थापित वैदिक धर्म, बौद्ध एवं जैन धर्मों, विभिन्न संप्रदायों तथा प्राचीन भारतीय दर्शन में सहिष्णुता एक आवश्यक अभिलक्षण के रूप में विद्यमान रही है। प्राचीनकाल में अशोक जैसे शासकों ने भी श्सभी धर्मों में सार वृद्धिश की बात की और जनता की एक-दूसरे के धर्मों को सम्मान देने का आग्रह किया और आपस में प्रेम पूर्वक रहने की सलाह दी। मध्यकाल में भक्ति और सूफी संतों ने भी सहिष्णुता और प्रेम भाव का उपदेश दिया। यही नहीं, मुगल शासक अकबर ने भी श्सुलह-ए-कालश की नीति का पालन किया और उसके काल में धार्मिक और सामाजिक सहिष्णुता के सिद्धांत रचे गए।

स्वतंत्रता संघर्ष के समय सभी धर्मों तथा क्षेत्रों के लोगों ने समान रूप से एक साथ मिल-जुलकर आजादी की लड़ाई में भाग लिया। वर्तमान में भी भारत में सभी धर्मों और सांस्कृतिक मान्यताओं के लोग सहिष्णुता, प्रेम, भाईचारे, शांति और सद्भाव के साथ रह रहे हैं, जिसके कारण भारत आज भी विश्व में अनेकता में एकताश के अद्वितीय गुण के लिये जाना जाता है और इसी गुण ने भारत की एकता और अखंडता को अभी तक अक्षुण्ण बनाए रखा है। वर्तमान में अमेरिका जैसे देशों में नस्लीय हिंसा, पश्चिम एशिया के देशों में एकल धर्म होने के बावजूद उत्पन्न संघर्ष और अशांति इस बात के उदाहरण हैं कि विश्व के अन्य क्षेत्रों में सहिष्णुता और प्रेम भावना भारत की तुलना में कम है। भारत आज भी शरणार्थियों और पीड़ितों की आगे बढ़कर सहायता कर रहा है।

हालाँकि, गत वर्षों में देश में उत्पन्न हुए कुछ सांप्रदायिक तनावो, उत्तर-पूर्व के लोगों के साथ दुर्व्यवहार, भीड़ द्वारा हिंसा आदि की घटनाओं ने भारतीय समाज के सहिष्णुता और प्रेम के आदर्श को आहत करने का प्रयास अवश्य किया है, किंतु भारतीय संविधान और कानून इन सभी से निपटने में सक्षम साबित हुए हैं।

10. बिहार में पाल कला की प्रधान विशेषताओं का विवरण प्रस्तुत करें।

उत्तर

बिहार में पूर्व मध्यकाल में पालवंशीय शासकों के संरक्षण कला के विविध आयामों की विशेष प्रगति हुई जिन्हें सम्मिलित रूप से पालकला की संज्ञा दी जाती है । इस कला की प्रधान विशेषताएँ निम्नरूपेण हैं :

स्थापत्य कला-

बिहार में वास्तुकला के विकास में विशिष्ट प्रगति पालकाल में हुई। पालकालीन स्थापत्य के साक्ष्य ओदंतपुरी, नालंदा और विक्रमशीला महाविहार है। इन विहारों का निर्माण एक विशिष्ट योजना के आधार पर किया गया है। विक्रमशिला से ईंट निर्मित एक मंदिर और स्तूप का साक्ष्य भी मिला है। दीवारों के बाहरी हिस्से पर मिट्टी के तख्तियों से सजावट का काम किया गया है।

मूर्तिकला-

पाल काल की पत्थर और कांस्य प्रतिमाएँ साँचे में निर्मित हैं जिनके साक्ष्य नालंदा, कुक्रिहार अंतचक इत्यादि स्थानों से प्राप्त हुए हैं। कांस्य प्रतिमाओं की निर्माण शैली में धीमान और वीथिपाल का निणार्यक योगदान था। पत्थर की मूर्तियाँ काले बैसाल्ट की बनी हैं। इनमें शरीर के अग्र भाग को दिखाने पर विशेष ध्यान दिया गया है। मूर्तियों में अलंकार की प्रधानता है। सभी मूर्तियाँ सुन्दर है और कला की परिपक्वता को दर्शाती है।

चित्रकला-

पालकाल में पांडुलिपियों के चित्रण के साथ दीवारों पर भी चित्र बनाने के उदाहरण मिले हैं। पाल चित्रशैली के प्रमुख चित्रकार धीमान और वीथिपाल थे। चित्रित पाण्डुलिपियाँ तार पत्र पर लिखी गई हैं जिनके श्रेष्ठ उदाहरण अष्टसहस्रिका, प्रज्ञापारमिता और पंचरक्ष है । इनमें अधिकतर बौद्ध धर्म से संबंधित चित्र हैं, जिन पर तांत्रिक कला का प्रभाव भी स्पष्ट है। इन चित्रों को बनाने में प्राथमिक रूप से लाल, नीला और काला एवं सफेद रंगों का प्रयोग हुआ है।

भित्तिचित्र के उदाहरण नालंदा के सरायटीले से प्राप्त हुए हैं। ग्रेनाइट पत्थर के एक बड़े चबूतरे के नीचे फूल, मनुष्य एवं पशुओं का चित्रण किया गया है। इनमें हाथी, घोडा, नर्तकी, बोधिसत्व और जम्भला प्रमुख हैं। इन चित्रों की शैली पर अजंता और बाघ गुफा चित्रों की शैली का प्रभाव देखा जा सकता है।

11 क्या आप के विचार में खिलाफत आंदोलन को महात्मा गांधी के समर्थन ने उनकी धर्म निरपेक्ष साख पर

बट्टा लगा दिया था। घटनाओं के आकलन को आधार बनाते हुए अपना तर्क प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर

खिलाफत आंदोलन मुसलमानों के वैश्विक धर्मगुरू खलीफा के प्रति ब्रिटेन के दुर्व्यवहार के विरोध तथा खलीफा के समर्थन के लिए भारतीय मुसलमानों ने किया था। तुर्की के खलीफा से भारतीय मुसलमानों का संबंध केवल धार्मिक एवं भावनात्मक था। इस तरह इसका स्वरूप मूल रूप से धार्मिक था। महात्मा गांधी ने इसका न केवल सक्रिय समर्थन किया अपितु इसे असहयोग आंदोलन से जोड़ दिया जो कि एक राजनीतिक आंदोलन था। कई आलोचकों ने इसे उनके धर्म निरपेक्षता के घोषित सिद्धांत के विपरीत माना है।उनका तर्क है कि–

गांधीजी ने राजनीतिक उद्देश्य से धार्मिक भावना का प्रयोग किया जो कि धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत के विरूद्ध है। उन्होंने समर्थन के बदले मुसलमानों से गोवध रोकने की मांग की थी।इससे धार्मिक भावना को बढ़ावा मिला। असहयोग आंदोलन की वापसी के बाद यह भावना धार्मिक कट्टरता की तरफ बढ़ने लगी जिस कारण कई साम्प्रदायिक दंगे भी हुए।

इन्हीं तर्कों के आधार पर आलोचक गांधीजी के धर्मनिरपेक्ष साख पर बट्टा मानते हैं। लेकिन यह विचार सही नहीं है क्योंकि–

गांधीजी ने खिलाफत आंदोलन को समर्थन राजनीतिक लाभ के लिए नहीं अपितु हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए दिया था।

समर्थन का एक कारण यह था कि वे मुसलमानों के पक्ष को न्यायसंगत मानते थे। उनका मानना था कि समाज में रहने वाले प्रत्येक वर्ग को आवश्यकता होने पर एक–दूसरे का साथ देना चाहिए। अतः मुसलमानों के न्यायसंगत मांग में साथ देना हिन्दुओं का कर्त्तव्य है।

मुस्लिम लीग स्वयं को मुसलमानों का तथा कांग्रेस को सवर्ण हिन्दुओं की पार्टी कहती थी। इस विचार का खण्डन कर कांग्रेस को समस्त देश का प्रतिनिधि सिद्ध करने के लिए गांधीजी ने इसे एक अवसर समझा।

बाद में यद्यपि साम्प्रदायिकता बढ़ी लेकिन आरंभ में हिन्दू–मुस्लिम एकता का सराहनीय प्रदर्शन हुआ। इससे सिद्ध होता है कि साम्प्रदायिक एकता का गांधीजी का अनुमान पूर्णतः गलत नहीं था।

दोनों पक्षों के उपर्युक्त तर्कों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि गांधीजी की धर्मनिरपेक्षता पर किसी तरह का बट्टा नहीं लगा।

12. आचार्य विनोबा भावे के भूदान व ग्रामदान आंदोलनों के उद्देश्यों की समालोचनात्मक विवेचना कीजिए और उनकी सफलता का आकलन कीजिए।

उत्तर

विनोबा भावे ने गांधीजी के आर्थिक विचारों को व्यवहारिक रूप में विकसित किया जिसका अर्थ था भूमि केवल कुछ ही लोगों के हाथ में न रहे। विनोबा भावे चाहते थे कि ग्रामीण धनाढ्य अपनी जमीन का कुछ हिस्सा भूमिहीनों को स्वेच्छा से दे दें। भूदान आंदोलन वर्ष 1951 में तत्कालीन आंध्र प्रदेश के तेलंगाना क्षेत्र में किसान विद्रोह के तुरंत बाद प्रारंभ किया गया था तथा कुछ वर्ष बाद 1957 में 'ग्रामदान' के नाम से यह आंदोलन प्रारंभ हुआ। इसका उद्देश्य था प्रत्येक गांव में भू–स्वामी तथा पट्टेदार अपनी भूमि के अधिकार को त्याग दें, तदुपरांत सम्पूर्ण भूमि एक गांव सभा की सम्पत्ति हो जाती जिससे उसके सबके बीच तथा संयुक्त रूप से खेती करने का उद्देश्य प्राप्त किया जा सके। विनोबा भावे को आशा थी कि भदान तथा ग्रामदान द्वारा भूमि का निजी स्वामित्व समाप्त किया जा सकेगा तथा उनका आंदोलन भूमि के न्यायपूर्ण बंटवारे, खेतों को संयुक्त करने तथा उन पर संयुक्त खेती करने की प्रक्रिया को सुनिश्चित करेगा। विनोबा भावे ने यह आंदोलन जमींदारों के विरुद्ध किसानों के क्रोध को शांत करने के लिए प्रारंभ किया था। वह क्रोध तो तेलंगाना आंदोलन में मुखर हुआ था।

विनोबा भावे तथा जयप्रकाश नारायण (जेपी) के मतभेद होने के कारण 1970 के दशक के शुरू में यह आंदोलन बिखर गया। यह आंदोलन गांवों में लोकतांत्रिक मूल्य नहीं उत्पन्न कर सका, बल्कि उससे पुराने सामंतवादी मूल्यों को ही बल मिला। परंतु यह कहा जा सकता है कि इस आंदोलन ने गांधीवादी सोच के तहत् सामाजिक परिवर्तन लाने के प्रति लोगों को जागृत किया।

YOUTH DESTINATION YOUR DREAM, OUR MISSION

13 सरकार द्वारा संचालित 'स्वदेश दर्शन योजना' तथा 'प्रसाद योजना' किस प्रकार पर्यटन विकास एवं भारतीय सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में योगदान दे सकती है? चर्चा कीजिए।

उत्तर

भारत में पर्यटन क्षेत्र का देश की सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 6.8 प्रतिशत हिस्सा है पर्यटन से देश में रोजगार का सृजन होता है, विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होती है तथा देश का आर्थिक विकास होता है। देश-विदेश के पर्यटकों को भारतीय सांस्कृतिक विरासत को जानने का भी अवसर प्राप्त होता है तथा साथ ही इससे सांस्कृतिक, प्राकृतिक एवं धार्मिक विरासतों का संरक्षण भी होता है। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए सरकार ने पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए श्स्वदेश दर्शन योजनाश तथा श्प्रसाद योजनाश संचालित की है। थीम आधारित भारत का इतिहास पर्यटक परिपथों के एकीकृत विकास के लिए श्स्वदेश दर्शन योजनाश का शुभारंभ किया गया है। जबकि पर्यटन स्थलों पर आधारभूत सुविधाएं विकसित एवं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रसाद योजना की शुरूआत की गयी है।

स्वदेश दर्शन योजना

स्वदेश दर्शन योजना का 2014-15 में पर्यटन मंत्रालय द्वारा देश में विषय (थीम) आधारित पर्यटन सर्किट विकसित करने के उद्देश्य के साथ शुभारम्भ किया गया। स्वदेश दर्शन योजना को एक समन्वित तरीके से उच्च पर्यटन मूल्य, प्रतिस्पर्धा और स्थिरता के सिद्धांतों पर क्रियान्वित किया जा रहा है। योजना सभी हितधारकों की चिंताओं, पर्यटन के अनुभव को समृद्ध करने और रोजगार के अवसर बढ़ाने पर केंद्रित है।

उद्देश्य

पर्यटन को आर्थिक विकास एवं रोजगार सृजन के एक बड़े वाहक के रूप में स्थापित करना। -

भारत को एक वैश्विक ब्रांड तथा एक विश्वस्तरीय पर्यटन गंतव्य के रूप में बढ़ावा देना। झ

विविध थीम आधारित परिपथों एवं तीर्थस्थलों में विश्वस्तरीय आधारभूत संरचना का विकास करना। पर्यटन आकर्षण बढ़ाने के माध्यम से समग्र पर्यटन अनुभव उपलब्ध कराना।

स्वदेश दर्शन योजना की विशेषताएं

इस योजना के तहत 13 थीम आधारित परिपथों की पहचान की गई है।

ये परिपथ हैं-पूर्वोत्तर भारत परिपथ, बौद्ध परिपथ, हिमालय परिपथ, तटीय परिपथ, कृष्ण परिपथ, मरुस्थलीय परिपथ, जनजातीय परिपथ, वन्यजीव परिपथ, ग्रामीण परिपथ, आध्यात्मिक परिपथ, रामायण परिपथ, धरोहर परिपथ एवं ईको परिपथ।

योजना की प्रगति

स्वदेश दर्शन योजना के तहत रामायण सर्किट और कृष्णा सर्किट पर राष्ट्रीय समिति की पहली बैठक जून 2016 को आयोजित की गई थी, जिसमें ।। रामायण सर्किट और 12 कृष्णा सर्किट स्थापित करने के प्रस्ताव को अनुमोदित किया गया।

रामायण सर्किट के तहत स्थल

पर्यटन मंत्रालय के तहत विकास हेतु चिह्नित 15 थीम आधारित सर्किट्स में से एक है रामायण सर्किट।

गंतव्य स्थलों के रूप में पूरे देश में उन स्थानों को चुना गया है जिन स्थानों पर भगवान राम गए थे।

राम के 15 गंतव्य स्थान हैं- अयोध्या, शृंगवेरपुर एवं चित्रकूट (यूपी), सीतामढ़ी, बक्सर एवं दरभंगा (बिहार), नंदीग्राम (पश्चिम बंगाल), महेंद्रगिरि (ओडिशा), जगदलपुर (छत्तीसगढ़), भद्राचलम (तेलंगाना), रामेश्वरम् (तमिलनाडु), हम्पी (कर्नाटक), नासिक एवं नागपुर (महाराष्ट्र)।

प्रसाद योजना (PRASAAD Yojana) के तहत पर्यटन विभाग से जुडी सभी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति पर ध्यान दिया जायेगा। बुनियादी ढांचा के विस्तार, सडक एवं परिवहन सुविधाओं, रेलवे, नागरिक उड्डयन और कौशल विकास प्रशिक्षण के जरिए देश में पर्यटन को बढ़ावा देना इस योजना का प्रमुख उद्देश्य है।

वाराणसी जैसे बौद्ध सर्किट के महत्वपूर्ण स्थलों को हेलिकॉप्टर सेवाओं से जोड़ना, महत्वपूर्ण पर्यटक स्थलों की रेलगाड़ियों में पर्यटकों के लिए विशेष डिब्बे, रोजगार बढ़ाने के लिए स्थानीय लोगों विशेष रूप से महिलाओं को पर्यटक गाइड के रूप में प्रशिक्षित करना, पर्यटन क्षेत्रों कला एवं संस्कृति में परिवहन और ठहरने जैसी आधाभूत बुनियादी सुविधाओं में सुधार करना शामिल है। प्रसाद योजना के अनुसार तीर्थ स्थलों पर ठहराव, पेयजल, स्नानागार, शौचालय, साफ-सफाई, बिजली, सुरक्षा आदि की बेहतर सुविधा उपलब्ध रहेगी। सभी कॉम्पलैक्सों में सुविधाओं को बहाल रखने

YOUR DREAM, OUR MISSION YOUTH DESTINATION

हेत् केयर टेकर भी तैनात रहेंगे। पर्यटन से हमारे देश में विदेशों से राजस्व आता है इससे देश के आर्थिक विकास को गति मिलती है। अत: पर्यटक एवं धार्मिक स्थलों पर बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराना आवश्यक हो जाता है। ऐसी स्थिति में प्रसाद योजना समय की मांग के अनुसार प्रासंगिक है।

निष्कर्ष :

भारत की समृद्ध सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक और प्राकृतिक विरासत देश में पर्यटन और रोजगार निर्माण के विकास के लिए एक बड़ी संभावना प्रदान करती है। यह पर्यटन और विभिन्न प्रकार के पर्यटकों के लिए आकर्षक अनुभव प्रदान करके एक एकीकृत दृष्टिकोण के माध्यम से हासिल किया जा सकता है। सरकार द्वारा पर्यटन क्षेत्र के विकास हेतु संचालित स्वदेश दर्शन योजना तथा प्रसाद योजना के द्वारा विदेशी राजस्व की प्राप्ति तथा रोजगार के नये अवसर उपलब्ध होंगे। थीम आधारित पर्यटन सर्किट तथा पर्यटन स्थलों के आधारभूत विकास से देश के आर्थिक विकास में स्थानीय समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित होगी। इन योजनाओं के माध्यम से देशी एवं विदेशी पर्यटकों को भारतीय सांस्कृतिक धरोहरों एवं विरासतों के बारे में जानकारी मिलेगी। इससे सांस्कृतिक एवं धार्मिक विरासतो का संरक्षण होगा तथा भारतीयों को अपने सांस्कृतिक विरासतों के महत्त्व पर गौरवान्वित होन का भी अवसर प्राप्त होगा। इन योजनाओं का क्रियान्वयन करते समय हमें पर्यावरणीय चिन्ताओं को ध्यान में रखना होगा तथा इन स्थलों पर पॉलिथीन, खाद्यपदार्थों के पैकिंग कवर एवं प्लास्टिक निर्मित वस्तुओं के फेकनें पर रोक लगानी होगी। पारिस्थितिक पर्यटन (Eco & Tourism) को बढ़ावा देना होगा तथा पर्यटकों की सुरक्षा भी सुनिश्चित करनी होगी। इन योजनाओं को नौकरी निर्माण और आर्थिक विकास के लिए एक प्रमुख इंजन के रूप में पर्यटन क्षेत्रों को बढ़ावा देने एवं स्वच्छ भारत अभियान, कौशल भारत, मेक इन इंडिया आदि जैसी अन्य सरकारी योजनाओं के साथ मिलाकर समेकित करने की कल्पना की गई है।

14. उन परिस्थितियों का विश्लेषण कीजिए जिनके कारण वर्ष 1966 ताशकंद समझौता हुआ। समझौते के विशिष्टताओं की विवेचना कीजिए।

उत्तर

भारत और पाकिस्तान के बीच 23 सितम्बर, 1965 को युद्ध विराम की घोषणा के बावजद सीमावर्ती क्षेत्रों में परेशानियां बनी रहीं। इस संदर्भ में सोवियत संघ ने विशेष रुचि ली तथा दोनों पक्षों को वार्ता हेतु आमंत्रित किया।

4 जनवरी, 1966 को पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान तथा भारत के प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के बीच वार्ता शुरू हुई। अंतत: 19 जनवरी, 1966 को दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक ताशकंद समझौते पर हस्ताक्षर हुए। इस समझौते के महत्वपूर्ण बिन्दु निम्नलिखित हैं

भारत और पाकिस्तान सहमत हैं कि दोनों पक्ष संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर के अनुसार अच्छे पड़ोसी संबंध बनाने हेतु सभी प्रकार के प्रयास करेंगे। संयुक्त राष्ट्र संघ चार्टर के तहत् दोनों अपने कर्तव्य को दृढ़ता से निभाने का वचन देते हैं कि वे बल का प्रयोग नहीं करेंगे तथा अपने विवादों को हल शांतिपूर्ण ढंग से करेंगे।

दोनों देश अपने सभी हथियारबन्द जवानों को 25 फरवरी, 1966 तक वापस उस स्थान तक कर लें, जहां वे 5 अगस्त, 1965 से पहले तक थे तथा दोनों पक्ष युद्ध-विराम रेखा पर युद्ध-विराम टीमें रखेंगे।

भारत-पाक संबंध एक-दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करने के सिद्धांत पर आधारित होंगे।

दोनों पक्ष अन्य देश के विरुद्ध होने वाले किसी भी दुष्प्रचार को हतोत्साहित करेंगे तथा जिस प्रकार के प्रचार से दोनों देशों के बीच मित्रवत् सम्बन्ध बढ़े वैसे प्रचार को प्रोत्साहित करेंगे।

दोनों देशों के हाई कमिश्नर अपने-अपने कार्यस्थानों पर लौट जाएंगे तथा भारत और पाकिस्तान के बीच कूटनीतिक संबंध फिर से स्थापित किए जाएंगे।

युद्धकाल के बंदियों के हस्तांतरण (Repartiation) की प्रक्रिया पूरी करने के लिए दोनों देश अपने-अपने अधिकारियों को निर्देश देंगे।

भारत और पाकिस्तान शरणार्थियों एवं अवैध प्रवासियों की समस्याओं से संबंधित प्रश्न पर बातचीत जारी करेंगे। इसके अतिरिक्त वे झगड़े के समय प्रत्येक पक्ष द्वारा ली गई धनसम्पत्ति को लौटाने के बारे में बातचीत करने को सहमत होंगे।

15. आयु, लिंग तथा धर्म के बंधनों से मुक्त होकर, भारतीय महिलाएं भारत के स्वाधीनता संग्राम में अग्रणी बनी रहीं। विवेचना कीजिए।

YOUR DREAM, OUR MISSION
YOUTH DESTINATION

उत्तर

स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अपना कर्त्तव्य निभाया। 1857 के विद्रोह के समय राजघरानों की महिलाएं स्वतंत्र भारत का स्वप्न पूरा करने के लिए पुरुषों के साथ एकजुट हुई। इनमें प्रमुख थीं- इंदौर की महारानी अहिल्याबाई होल्कर तथा झांसी की रानी लक्ष्मीबाई। 19वीं सदी के अंत में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ महिलाओं की घनिष्ठता बढ़ी और भारत की राष्ट्रीय गतिविधियों में उनका योगदान प्रारंभ हुआ। बंगाल विभाजन (1905) के समय महिलाओं ने विदेशी समानों का बहिष्कार किया। इसमें सरोजिनी नायडू, उर्मिला देवी, दुर्गाबाई देसमुख, बसंतीदेवी, कृष्णाबाई राम आदि प्रमुख थीं। गांधीजी के असहयोग आंदोलन में महिलाओं ने सक्रिय रूप से हिस्सा लिया। इस आंदोलन में राजकुमारी अमृतकौर, सुचेता कृपलानी, सरलादेवी, चौधरानी मुथुलक्ष्मी रेड्डी, सुशीला नायर, अरुणा आसफ अली आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कस्तूरबा गांधी, कमला नेहरू, विजयलक्ष्मी पंडित ने राष्ट्रीय आंदोलन में प्रमुखता से हिस्सा लिया। विजयलक्ष्मी पंडित ने विदेशों में भारत का नेतृत्व किया।

विभिन्न समुदायों और वर्गों की महिलाएं भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के संघर्षों, जुलूसों, प्रदर्शनों में रचनात्मक कार्यकर्ताओं के रूप में जडी और ग्रामीण पुनर्निर्माण योजनाओं में भाग लिया और जिम्मेदारी निभाई। उच्च से लेकर निम्न शिक्षित सभी तरह की महिलाओं ने कंधे से कंधा मिलाकर लोगों में साक्षरता को बढ़ाने तथा आत्मनिर्भरता विकसित करने का काम किया। पर्दा प्रथा से बाहर निकलकर महिलाएं रुढ़ियां, अंधविश्वास और साम्प्रदायिक अलगाववाद से लड़ीं। कृषक महिलाओं ने बोरसाद तथा बारदोली जैसे ग्रामीण सत्याग्रहों में महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाई। महिलाओं ने नमक सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन तथा सभी गांधीवादी सत्याग्रहों में भाग लिया। उन्होंने सभाएं की, जुलूस निकाले, विदेशी कपड़े और मदिरा बेचने वाली दुकानों को बंद करवाया तथा जेल गई।

YOUR DREAM, OUR MISSION
YOUTH DESTINATION